उपसंहार

नारी और समाज का पुरातन काल से अन्योनाश्रित संबंध रहा है। पुरुष की तरह नारी भी समाज का एक अंग है। समाज को नारी से प्रेम, प्रेरणा, सृष्टि और शक्ति मिलती है तो समाज से नारी की प्रतिष्ठा भी मिलती है और अवमानना भी। ऐसे ही नारी जीवन का चित्रण डॉ.रांगेय राघव जी ने 'राई और पर्वत', 'पतझर', तथा 'कल्पना' में किया है। वे एक सजग साहित्यकार थे। उनका जन्म 17 जनवरी, 1923 में हुआ था । उनका बाल्यकाल मजे में बिता। उनका असली नाम 'वीर राघव' तथा साहित्यिक नाम 'रांगेय राघव' था। आगरा विश्वविद्यालय में उन्होंने पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की। सुलोचना जी से प्रभावित होकर 7 मई, 1956 में उनके साथ विवाह किया। विवाह के चार वर्ष के बाद 'सीमंतिनी' के जन्म से एक ओर राघव परिवार खुश हुआ तो दूसरी ओर राघव जी के कैंसर रोग के कारण परिवार में दुख की छाया फैल गई। अतः सुख-दुख के साथ पारिवारिक जीवन बिता।

राघव जी का व्यक्तित्व सुंदर तथा आकर्षक था। सीधे-साधे व्यक्तित्व की तरह उनका स्वभाव भी सरल, हँसमुख, उदार तथा स्वाभिमानी था। प्रकृति के सानिध्य में रहना उन्हें बहुत पसंद था। उनके बनाए चित्र, कविता आदि प्रकृति पर आधारित हैं । अपने जीवन में उन्हें लेखन तथा पठन के साथ-साथ फिल्म देखना, बैडमिंटन और शतरंज खेलना, चित्रकारी, संगीत, प्राचीन शिलालेखों की खोज, इतिहास चितन में भी विशेष रुचि थी। साथ ही ब्रिटिश शासन का विरोध और दीन-दलितों की मदद करना उनकी अभिरुचि का ही एक हिस्सा था। उनके बुजुर्गों के कई गुणों का प्रभाव राघव जी पर दिखाई देता है। एक कर्तव्यनिष्ठ नागरीक तथा लेखक होने के कारण उन्होंने अपनी पत्नी को आत्मनिर्भर बनाया और नवलेखकों तथा युवाओं को

साहित्य-लेखन के लिए प्रेरित किया। अपने उपन्यासों में समाज का यथार्थ वर्णन कर उन्हें सोद्देश्यपूर्ण बनाया है। अहिंदी भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध बनाया है। वे नारी का आदर करते थे। माँ, बुआ, मौसी आदि उनके श्रद्धास्थान थे। उनकी अधिक तर साहित्यिक कृतियाँ नारी जीवन पर ही आधारित हैं ।

राघव जी ने साहित्यकार के नाते अपने साहित्य लेखन के माध्यम से पाठक के रुप में समाज का ज्ञानार्जन किया है। अतः जनजागृती के लिए उन्हें शारीरिक, पारिवारिक तथा आर्थिक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ा था। उनकी साहित्यिक प्रतिभा के लिए परिवार, समाज और प्रकृति प्रेरक शक्तियाँ बनी रही हैं। उन्होंने साहित्य की हर विधा में लेखनी चलाई है। उन्होंने 13 काव्यसंग्रहों, 3 नाटक, उपन्यास के वर्गीकरणानुसार 39 उपन्यास, 'तूफानों के बीच' नामक रिपोर्ताज, 16 आलोचना ग्रंथ, संस्कृत तथा अंग्रेजी के 44 ग्रंथों को हिंदी में अनूदित किया है। नवलेखकों और युवाओं के साथ समाजशास्त्रीय लेखन और 2 एकांकी संग्रहों के साथ चलचित्र के क्षेत्र में भी उन्होंने अनुभव प्राप्त किया था जो उन्हें रास नहीं आया। राघव जी की अनेक पुस्तकों के लिए उन्हें विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। किंतु 12 सितंबर, 1962 में उन्हें अपनी साहित्य यात्रा हमेशा के लिए समाप्त करनी पड़ी । भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरांत सन 1966 ई.में 'महात्मा गांधी' पुरस्कार से सम्मानित किया ।

राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर', तथा 'कल्पना' उपन्यास तात्त्विक दृष्टि से सफल रहे हैं । उपन्यासों के कथानक में ग्रामीण और शहरी जीवन का यथार्थ चित्रण है । विद्या और रामभरोसे की मुख्य कथा के साथ फूलवती और

हरदेव की गौण कथा पर आधारित 'राई और पर्वत' चार भागों में विभाजित किया है। 'पतझर' तेरह अध्यायों में मोहिनी और जगन्नाथ इन दो मनोरुग्णों के माध्यम से डॉ.सक्सेना के सहारे लेखक ने मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उभारा है और बताया है कि किस तरह युवा वर्ग इस रोग का शिकार होता है । साथ ही नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में अंतर दिखाकर प्रेम को शाश्वत बना दिया है। 'कल्पना' उपन्यास में पाँच कहानियों की सहायता से आधुनिक जीवन के साथ ही ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से काल्पनिकता के द्वारा विफल होते आए दांपत्य जीवन को दिखाया है। अतः प्रस्तुत उपन्यासों के कथानक रोचक, प्रभावात्मक और मौलिक लगते हैं ।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से राघव जी का निर्माण कौशल स्पष्ट होता है। 'राई और पर्वत' की विद्या और रामभरोसे, 'पतझर' के डॉ.सक्सेना, मोहिनी और 'कल्पना' के पात्र लेखक और नीला आदि प्रमुख स्त्री-पुरुष पात्र मनुष्य जीवन की वास्तविक स्थिति को दर्शाते हैं, जो विश्वसनीय और प्रभावात्मक लगते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के संवाद तथा कथोपकथन तत्कालीन युग को दर्शाते हैं, जो विविध प्रसंग, घटना, परिस्थिति और मानवी जीवन के सुख-दुखों से परिचित कराते हैं । प्रस्तुत उपन्यासों के पात्रों का जीवन तथा कार्य, घटना एवं परिस्थिति से देशकाल-वातावरण स्पष्ट होता है जैसे - 'राई और पर्वत' ग्रामकथा है तो 'पतझर' और 'कल्पना' की कथा आधुनिक तथा ऐतिहासिक कथा की ओर निर्देश करती है। साथ ही वातावरण तथा प्रसंगानुरुप भाषा-शैली को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उद्देश्य की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास सौद्देश्य हैं, जिसमें उन्होंने समाज का यथार्थ वर्णन कर सामाजिक कुरीतियों तथा शोषक वर्ग के प्रति कड़ा विरोध दर्शाया है। नारी प्रधान उपन्यास होने के कारण युगों-युगों से पुरुष प्रधान समाज के दबाव में जीती नारी को स्वतंत्र तथा मुक्त होकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनने तथा सम्मानित

जीवन बिताने का सुझाव दिया है। अतः राघव जी के विवेच्य उपन्यास औपन्यासिक तत्वों की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

राघव जी के विवेच्य उपन्यास नारी प्रधान होने के कारण नारी के विविध रुपों की सहायता से उन्होंने नारी जीवन को चित्रित किया है। माता,पुत्री और पत्नी इन प्रमुख रुपों के साथ-साथ सास, बहू, देवरानी-जेठानी, भाभी, प्रेमिका, सखी और विधवा आदि पारिवारिक रुप तो दासी, कलंकिता, कातिल एवं हत्यारिन और कैदी जैसे परिवारेतर रुप भी चित्रित हुए हैं । नारी के शाश्वत रुप उनकी चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाते हैं जैसे - सुसंस्कारित एवं सहनशील, त्यागमयी एवं स्वाभिमानी, अपमानित किंतु पवित्र, असहाय एवं निर्भिक तो विद्रोही एवं आधुनिक रुप दिखाई देते हैं । इन रुपों के साथ नारी का परस्पर विरोधी रुप भी प्रस्तुत हुए हैं । उदाहरणस्वरुप - 'राई और पर्वत' में नारी का 'वात्सल्यमयी माता' रुप के साथ नारी का 'व्यभिचारिणी' रुप भी दिखाई देता है । पत्नी के 'पतिव्रता' और 'पतिता' तो प्रेमिका में 'सफल' और 'असफल' प्रेमिका के रुप सामने आते हैं जो परिस्थितिवश, प्रतिशोध, रुढ़ि-परंपरा का मर्यादा पालन आदि के कारण परिवर्तित होता हुआ दिखाई देता है।

विवेच्य उपन्यासों की नारियाँ रुढ़ि-परंपरा से जुड़ी होने के कारण तथा अपने संस्कारित मन के कारण इनका व्यक्तिगत जीवन सरल तथा भावुक दिखाई देता है। परिणामस्वरुप उन्हें अनेक कठिनाइयों और दुखों को सहना पड़ता है। तो फूलवती, निर्मला जैसी नारियाँ परिस्थितिवश स्वच्छंदी जीवन बिताती हैं, जिनका अंत त्रासद होता है। विद्या, नीला जैसी नारियों का परिवार द्वारा शोषण किया जाता है अतः इनका जीवन पीड़ित दिखाई देता है। साथ ही फूलवती और प्रतीची जैसी नारियाँ अपने

परिवार के सदस्यों के साथ कठोरता से व्यवहार करती हैं । अतः इन नारियों का पारिवारिक जीवन दुखद ही दिखाई देता है, जो पुरुष जाति के अन्याय की देन है। परिणामतः समाज में भी इनका स्थान गिरा हुआ दिखाई देता है, जिसके कारण उन्हें विवशता से समाज के घृणित तथा तिरस्कृत व्यवहार को सहना पड़ता है। किंतु अंत में ये नारियाँ जागृत होकर समाज का विरोध करती हैं और जागृत जीवन बिताती हैं।

ये नारियाँ भारतीय मध्यवर्गीय होने के कारण इनमें धार्मिकता कूट-कूट कर भरी हुई दिखाई देती है। भाग्य, पाप-पुण्य, कर्मकांड आदि को यह मानती हैं । अतः इनका धार्मिक जीवन भाग्यवादी और अंधविश्वासू दिखाई देता है, जो भारतीय रुढ़ि-परंपरा, शिक्षा का अभाव और अज्ञानता की ओर निर्देश करता है। साथ ही आर्थिक दृष्टि से परावलंबी होने के कारण इन्हें पति और पिता पर निर्भर रहना पड़ता है। मर्यादाशील होने के कारण वे चाहते हुए भी आत्मनिर्भर नहीं बन सकती। अतः उन्हें अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसीलिए राघव जी ने अपने उपन्यासों द्वारा नारी को स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया है।

राघव जी ने आलोच्य उपन्यासों में प्राचीन काल से आधुनिक युग की नारी समस्याओं का तुलनात्मक चित्रण किया है। नारी समाज का एक अंग होने के कारण समाज में प्रचलित विवाह विषयक समस्या से नारी जीवन ग्रासित दिखाई देता है। इन्हीं समस्याओं का यथार्थ चित्रण करने में राघव जी सफल हुए हैं । इन नारी समस्याओं का कारण नारी शिक्षा है, जो समस्या के रुप में उभरती है। विद्या जैसी नारी शिक्षा लेकर स्वावलंबी बनना चाहती है, जो परिस्थितिवश तथा मजबुरी के कारण अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकती और विवश जीवन बिताती है। नीला, मोहिनी, निर्मला जैसी नारियाँ शिक्षित होते हुए भी केवल मर्यादा पालन और संस्कारित मन के कारण परावलंबी जीवन बिताती हैं । उन्हें पुरुष प्रधान समाज के अन्यायों को सहना

पड़ता है । अतः परिवार तथा सामाजिक बंधनों में नारी जकड़ी रहने के कारण नारी मुक्ति की समस्या निर्माण होती है । मर्यादापालन, 'संस्कारित मन, सहनशीलता के कारण परिवार तथा समाज के बंधनों को तोड़कर मुक्त हो जाती है।

राघव जी ने प्रस्तुत उपन्यासों में सती प्रथा तथा अंधविश्वास जैसी समस्याओं से नारी की धार्मिक वृत्ति को भी स्पष्ट किया है। फूलवती जैसी नारी अपने अनैतिक संबंधों की पोल खुलने के कारण लज्जित होकर मृत पति के साथ सती जाती है और नारी वर्ग भी ऐसी ढोंगी पतिव्रता-सती की पूजा करता हैं । फूलवती जैसी अपवित्र और दुश्चरित्र नारी को सम्मान देती है और विद्या जैसी पवित्र नारी की विधवा अवस्था को अशुभ मानता है। अतः परंपरा से प्रचलित सती प्रथा और अंधविश्वास को चित्रित कर इन्हें नष्ट करने की ओर निर्देश किया है। इन मध्यवर्गीय नारी का जीवन परावलंबी होने के कारण उन्हें अपने जीवन में उपर्युक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परावलंबी होने के कारण इनके जीवन में आर्थिक समस्या प्रमुख रुप में उभर आई है। राघव जी की यह धारणा है कि नारी की प्रस्तुत शोषणों एवं यातनाओं से मुक्ति, स्वावलंबन तथा आत्मनिर्भरता से ही संभव है ।

इसी कारण उन्होंने विवेच्य उपन्यासों के अंत में नारी को अनैतिकता तथा मर्यादा के बंधनों से मुक्त किया है और सम्मानित जीवन बिताने का सुझाव दिया है। तात्पर्य यह कि राघव जी की प्रस्तुत उपन्यासों की नारियाँ अपने विशिष्ट जीवन दर्शन के साथ मानवतावादी वृत्ति से प्रेरित होकर हिंदी साहित्य में सक्रिय एवं गतिशील रही है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ :-

अनुसंधान की उपलब्धियाँ के रुप में प्राक्कथन में उठाए गए सवालों के उत्तर निम्न प्रकार से हैं -

प्रश्न (1) क्या, राघव जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है?

राघव जी नारी का आदर करते थे। वे नारी के समानाधिकार के पक्ष में थे । वे मध्यवर्ग तथा आर्थिक विपन्नावस्था के कारण त्रस्त रहते थे। नारी की विभिन्न समस्याओं को उन्होंने निकट से जाना था। इसी कारण उन्होंने मध्यवर्गीय नारी तथा आर्थिक विपन्नावस्था से उत्पन्न नारी समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने अतीतकालीन नारी से लेकर आधुनिक नारी जीवन का सूक्ष्म अध्ययन, चिंतन और अपने व्यक्तिगत अनुभव के साथ नारी जीवन को आलोच्य उपन्यासों में चित्रित किया है। राघव जी ग्रामीण तथा शहरी वातावरण में भी रह चुके थे। इसी कारण उन्होंने ग्रामीण तथा शहरी नारी के रुप में भारतीय संस्कृति तथा समाज की मर्यादा का पालन करनेवाली नारी का जीवन चित्रित किया है। जिससे उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर प्रभाव दिखाई देता है।

प्रश्न (2) क्या, रांगेय राघव जी नारी के विविध रुपों का चित्रण करने में सफल हुए हैं ?

आलोच्य उपन्यासों के नारी चित्रण में राघव जी ने नारी के किसी भी रुप को छोड़ा नहीं है । उन्होंने नारी के माता, पुत्री, पत्नी इन प्रमुख रुपों के साथ-साथ सास, बहू, देवरानी, जेठानी, प्रेमिका, सखी, विधवा आदि पारिवारिक रुपों

को चित्रित किया है। उन्होंने माता,पत्नी, प्रेमिका रुपों में परस्पर विरोधी रुपों को दिखाया है। माता रुप में 'वात्सल्यमयी' तथा 'व्यभिचारिणी', पत्नी रुप में 'पतिव्रता' और 'पतिता', प्रेमिका रुप में 'सफल' और 'असफल' आदि रुपों में नारी के दुख दर्द को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। उन्होंने दासी, कलंकिता, कातिल और कैदी नारी रुपों को प्रस्तुत किया है जो नारी की मजबुरी, असहायता, और पुरुष प्रधान समाज की कर्मठता की ओर निर्देश करते हैं । नारी शाश्वत रुपों में सुसंस्कारित एवं सहनशील, त्यागमयी एवं स्वाभिमानी, अपमानित तथा पवित्र, असहाय एवं निर्भिक विद्रोही तथा आधुनिक रुपों को चित्रित किया है जो नारी के स्वभाव गुणों के साथ परिवर्तित गुणों को भी दर्शाते हैं । अतः राघव जी ने नारी की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उसके यथार्थवादी रुप को उद्घाटित किया तो दूसरी ओर उसके आदर्शवादी स्वरुप को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है इस प्रकार नारी में यथार्थ और आदर्श दोनों का समन्वय है। तात्पर्य राघव जी नारी रुपों का चित्रण करने में पूर्णतः सफल हुए हैं ।

प्रश्न (3) विवेच्य उपन्यासों में राघव जी का नारी के प्रति दृष्टिकोण कैसा रहा है?

राघव जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की सत्य तथा वास्तविक रुप को दर्शाया है और पुरुष तथा समाज के अन्याय को सहती आई नारी को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया है। पुरुष प्रधान समाज की कुरीतियों तथा बंधनों में बंधी नारी को स्वतंत्र करने का यत्न किया है। नारी को समाज अबला तथा असहाय मानता है किंतु वे नारी को सबला मानते हैं, नारी के पातिव्रत्य को जननीत्व का अभिमान मानते हैं । पुरुष की गुलामी को छोड़कर वे नारी को अपना दायित्व समझने तथा

अपने गौरव का अनुभव करने के लिए प्रेरित करते हैं । वे नारी पर कामचोर तथा आलसी आदि आरोप लगाकर नारी को अपने अस्तित्व के प्रति जागृत करने का प्रयास करते हैं ताकि वह आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बने और समाज में समानाधिकार प्राप्त कर सके । अतः इससे स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों में राघव जी का नारी के प्रति दृष्टिकोण सही रहा है ।

<u>अनुसंधान की नई दिशाएँ</u> :-

(1) रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन ।

(2) रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ ।

(3) रांगेय राघव के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध ।

उपर्युक्त विषयों पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है।

****